International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 46-50

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गुटनिरपेक्षता का औचित्य

डॉ० संध्या जायसवाल[1], चन्द्रकिरण साहू[2]

[1] विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, डॉ० सी० वी० रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] एम.फिल., राजनीति विज्ञान, डॉ० सी० वी० रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से गुटनिरपेक्षता, गुटनिरपेक्ष आंदोलन उसका बदलता स्वरूप एंव वर्तमान प्रांसगिकता से संबन्ध रखता है। इस क्रम में यह कहा जा सकता है कि गुटनिरपेक्ष शब्द का विभिन्न अर्थो में प्रयोग किया गया है। इस शब्द का 1945 के पश्चातवर्ती काल में प्रादुर्भाव हुआ, पश्चिमी देशों में अक्सर तटस्थवाद शब्द का प्रयोग किया जाता रहा है ओर इन्ही दोनो शब्दो की सहायता से ही गुट निरपेक्षता को समझने की कोशिश की जाती रही है। इसका कारण संभवत यह है कि पश्चिमी देशों को केवल तटस्थता का ही अनुभव है। इसलिये वो गुटनिरपेक्षता को तटस्थता का एक प्रकार समझते रहे है। भारत ने नवोदित राष्ट्रों की स्वतंत्रता एंव विकास में सहयोग दिया। परमाणु शक्तियो के शोषण से बचाव करने का प्रयास किया। तृतीय विश्व के देशों के लिये एक आदर्श प्रस्तुत किया। नई आर्थिक विश्व अर्थव्यवस्था के प्रयास किये। और आर्थिक विश्व व्यवस्था की स्थापना पर बल दिया। इसका प्रमुख कारण यही रहा कि जब तक इन देशों में भूख, गरीब, बेकारी व बीमारियां रहेगीं तब तक एक स्थाई व समता व न्याय पर आधारित विश्व की स्थापना नहीं की जा सकती। अतः विशेषकर 1970 के दशक से ही नई आर्थिक विश्वव्यवस्था के प्रयास आरंभ्भ हो गये थे। शीत युद्धोत्तर युग में भारत ने ही निरन्तर इसको बचाया, व यह तर्क दिया कि भारत का मानना है कि अब इस संगठन की प्राथमिकताओं को बदलने की आवश्यकता है जब तक तीसरी दुनिया की मूलभूत समस्याऐं बनी रहेगीं, इस संगठन का महत्व बना रहेगा। अतः स्पष्ट है कि भारत ने इस आंदोलन को विश्व व्यापी स्वरूप प्रदान करने में विशिष्ट कार्य किया। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नही है कि अंर्तराष्ट्रीय राजनीति को भारत की यह एक विशिष्ट देन है।

मूल शब्द : गुटनिरपेक्षता, आंदोलन।

प्रस्तावना

भारत के संन्दर्भ में गुटनिरपेक्षता की विदेश नीति को समग्र मानवता के हितो की आकांक्षा से प्रारम्भ किया गया गुटनिरपेक्ष आंदोलन इसी पृष्ठभूमि में समझा जाना चाहिये कि यह मात्र तटस्थता नहीं है ओर समयानुसार इस आंदोलन का सरोकार ओर स्वरूप बदलता रहा है। यह भारत की विदेशनीति का महत्वपूर्ण पहलू व केन्द्र बिन्दु है। भारत द्वारा इस सिंद्धान्त को अपनाने के दो प्रमुख स्त्रोत है – भौतिक और गैर भौतिक। भौतिक तत्वो में भारत की भूराजनैतिक स्थिति तथा आर्थिक स्थिति महत्वपूर्ण रही है गैर भौतिक तत्वो में प्रमुख है भारत की ऐतिहासिक विरासत एंव भारतीय दर्शन एंव परम्पराओं का प्रभाव। अप्पा दो राय एंव एम.एस राजन के अनुसार भारत ने इस सिद्धान्त को निम्न तीन कारणो से अपनाया :–

1. भारत की परम्परा, सहनशीलता और बहुमूल्य विचारधारा।
2. भारत की भौगोलिक स्थिति।
3. नव स्वतंत्र राष्ट्र द्वारा अपनी रक्षा हेतु।

गुट निरपेक्षता की नीति के कई पहलू है परन्तु सामान्य रूप से इसे शीतयुद्ध व उससे सम्बद्ध गुटबंदियों से अलग रहने की नीति माना गया है। इसे दूसरे शब्दो में इसे शीत युद्ध से सम्बद्ध सैनिक गठबन्धनों में भागीदारी न करने वाला सिद्धान्त भी माना गया है। इसके अतिरिक्त इसे भारत का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाने वाला सिद्धान्त भी माना जाता है। इस सिद्धान्त के द्वारा भारत अपने विकल्पों की स्वतंत्रता के साथ अपने राष्ट्रीय हितो की पूर्ति तथा मुद्दो की योग्यता के आधार पर समर्थन करना चाहता था।

इस प्रकार गुटनिरपेक्षता का सिद्धान्त एक गत्यात्मक विदेशनीति है जिसमें सकारात्मक व नकारात्मक दोनो ही पहलू विद्यमान है। इसके नकारात्मक पहलू है :'

1. विश्व शक्ति गुटो व शीतयुद्ध से अलग रहना।
2. सैन्य गठबन्धनो में शामिल न होना।

इसके सकारात्मक पहलू है

1. विश्व शांति हेतु कार्य करना।
2. विश्व में स्वतंत्रता के प्रसार को बढ़ाना
3. उपनिवेशवाद की समाप्ति एंव स्वतंत्र राष्ट्रो के उदय को समर्थन।
4. राष्ट्र के मध्य सहयोग के दायरे मे विकास करना।

उक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत का गुटनिरपेक्षता से क्या अभिप्राय रहा है परन्तु इसके सही अर्थ को लेकर विशेषज्ञों में मतभेद है शायद इसीलिये कई लेखक इसे अलगाव वाद, गैर सम्बद्धता, तटस्थता, तटस्थीकरण, एकलवाद, अहिस्सेदारी आदि धारणाओं से जोड़ते है।

गुटनिरपेक्षता का अर्थ

'गुटनिरपेक्षता' शब्द को सर्वप्रथम जार्ज लिस्का द्वारा वैज्ञानिक अर्थ प्रदान किया गया, बाद में अन्य विद्वानों ने इसे अलग–अलग रूप में परिभाषित किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इसे पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा व्यवस्थित रूप दिया गया जिसको कर्नल नासिर तथा मार्शल टीटो ने भी स्वीकार कर लिया। जवाहर लाल नेहरू ने गुटनिरपेक्षता को परिभाषित करते हुए कहा है – "गुटनिरपेक्षता का अर्थ है अपने आप को सैनिक गुटों से दूर रखना तथा जहां तक

सम्भव हो तथ्यों को सैनिक दृष्टि से न देखना। यदि ऐसी आवश्यकता पड़े तो स्वतन्त्र दृष्टिकोण रखना तथा दूसरे देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना गुटनिरपेक्षता के लिए आवश्यक है।" स्पष्ट है कि केवल आंख बंद करके विश्व घटनाक्रम को देखते रहना गुटनिरपेक्षता नहीं है। यह सही ओर गलत में अन्तर करते हुए सही का पक्ष लेने की भी नीति है। गुटनिरपेक्षता का सरल अर्थ है कि विभिन्न शक्ति गुटों से तटस्थ या दूर रहते हुए अपनी स्वतन्त्र निर्णय नीति ओर राष्ट्रीय हित के अनुसार सही या न्याय का साथ देना। आंख बंद करके गुटों से अलग रहना गुटनिरपेक्षता नहीं हो सकती।

गुटनिरपेक्षता की नीति भारत द्वारा अपने लिये अपनाई गई जो बाद में तीसरी दुनिया का एक सशक्त आंदोलन बन गई। जिसमें तीसरी दुनिया के बहुमत के साथ साथ संयुक्त राष्ट्र, विकसित तथा अन्य देश, स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े अन्य संगठन आदि भी पर्यवेक्षकों तथा अतिथियों के रूप में जुड़ गये वर्तमान मे इससे जुड़े अन्य संगठनो की संख्या 28 है, जिसमे 18 देश व 10 संस्थाऐं है। यह स्पष्ट है कि भारत इस आंदोलन के माध्यम से शांति के प्रयास करता आया है।

शीतयुद्धोत्तर युग में गुटनिरपेक्षता के समर्थको एंव बाहय शक्तियों में इसकी सार्थकता को लेकर प्रश्नचिन्ह अवश्य लगा है। परन्तु अभी भी इसका विघटन नहीं हुआ है। इस संदर्भ में एम.एस राजन की इस टिप्पणी की सत्यता से इंकार नही किया जा सकता कि वर्तमान संदर्भ में गुट निरपेक्षता एक देश की नीति (भारत) तथा एक आंदोलन मे अवश्य कुछ द्वन्द सा आ गया है। इसलिये इसको एक देश की विदेशनीति कें के रूप में महत्व को नहीं नकारा जा सकता चाहे सामूहिक रूप से इसकी सार्थकता हो या न हो।

भारत ने ही इस आंदोलन का गठन करने के लिये शांति हेतु विशेष प्रयास किये ओर इसके व्यापक उद्देश्य स्वीकार करते हुये विश्व शांति के आधारों को सुदृढ़ करने पर कार्य किया। इसके जो भी उद्देश्य तय किये गये उनको भारत ने न केवल विदेश नीति की विषय सूची का विषय का बनाया, अपितु गुटनिरपेक्षता आंदोलन की भूमिका में इसे क्रियान्वित करने का प्रयास भी किया। भारत ने ही कुछ ऐसे प्रयास किये जिससे यह आंदोलन शातिं पूर्ण विश्व बनाने मे सहयोग दे सके। इसलिये इस आंदोलन कें प्रारम्भिक वर्षो में राष्ट्रीय स्वतंत्रता उपनिवेशवाद की समाप्ति सबसे महत्वपूर्ण व प्राथमिकता के विषय बने। ओर अनेक देशों की आजादी के प्रश्न महत्वपूर्ण बनें। परमाणु शक्तियों के शोषण से बचाव के प्रयास किये गये, तृतीय विश्व के देशों के लिये एक आदर्श की भूमिका अदा की। 1970 के दशक में नई आर्थिक विश्व व्यवस्था पर बल दिया और शीतयुद्धोत्तर युग में इसका बचाव किया। तथा निरंतर गतिशील रहकर प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष रूप से विश्व शांति की प्रक्रिया को मजबूत हीं नहीं किया अपितु उसे आगे भी बढ़ाया।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य

इस शोध कार्य को करने हेतु अनुसंधानकर्ता का प्रमुख उद्देश्य रहा है कि अंतर्राष्ट्रीय शांति सुरक्षा और सहयोग से ही विश्व के समस्त देश विकास कर सकते और इस आंदोलन को सफल बनाने व विश्व में तनाव को कम करने में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्व में तनाव की स्थिति कम करना एवं विश्व शांति हेतु गुटनिरपेक्षता के महत्व को स्पष्ट करना इस शोध प्रबंध का प्रमुख उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध का महत्व व योगदान

यह विषय अपनी प्रकृति से ही इस प्रकार का है कि द्वितीय विश्वयुद्धोपंरात के अंर्तर्राष्ट्रीय संबन्धों व विश्व राजनीति में यह अहम स्थान रखता है। अतः इस विषय पर प्रस्तुत शोध का विशेष महत्व है इस पर अध्ययन करना ओचित्यपूर्ण है ओर वर्तमान परिस्थितियों में इसकी बड़ी उपादेयता है जैसे –

1. भारत की विदेशनीति का निर्धारण करने वाले मूल कारको में गुट निरपेक्षता की भूमिका स्पष्ट है।
2. गुटनिरपेक्षता की नीति को स्वीकार करने मे बाह्य तथा घरेलू परिवेश का जो प्रभाव रहा उसको समझने की दृष्टि से भी प्रस्तुत शोध अत्यंन्त महत्वपूर्ण है।
3. बड़ी शक्तियो के साथ भारत के तत्कालीन और वर्तमान के संबंधों मे आये परिवर्तनों को भी समझने की दृष्टि से यह अध्ययन उपयोगी व महत्वपूर्ण है।
4. सामान्य परिस्थितियों में जो व्यवहार किया गया जिसके कारण इस नीति पर आरोप लगाये गये व उनकी वास्तविकता की दृष्टि से भी प्रस्तुत शोध अत्यन्त महत्वपूर्ण है।
5. शीतयुद्धो परांत अंर्तराष्ट्रीय परिवेश मे जो परिवर्तन आये है उनके मध्य गुट निरपेक्षता की नीति ओर उसके बदलते स्वरूप,उसके वर्तमान सरोकार आदि को समझने की दृष्टि से यह अध्ययन अंत्यन्त महत्वपूर्ण है।
6. यह माना जा सकता है कि शीत युद्ध से जो तनाव कम हुआ उसका पूरा लाभ विकासशील देशों को नहीं मिल पाया है अतः उनकी स्वतंत्र विदेशनीति, अंर्तराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा कि दृष्टि से अब भी महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से यह अध्ययन महत्वपूर्ण है।

शीतयुद्धोपरांत असंलग्नता या गुटनिरपेक्षता की नीति के समयानुसार जिन आवश्यक रूझानों को समयानुसार स्वीकार करना आवश्यक है उनकों समझने एवं व्यवहार मे लाने कि दृष्टि से भी प्रस्तुत शोध अत्यंत उपयोगी है।

गुट निरपेक्षता शीतयुद्ध के विरूद्ध नकारात्मक की बजाय सकारात्मक प्रतिक्रिया के रूप में उत्पन्न हुई तथा धीरे धीरे इसने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के एक सिद्धान्त का रूप ग्रहण कर लिया तथा विश्व व्यापी आंदोलन का आधार बन गई अतः यह कहना अति संकुचित दृष्टिकोण है कि शीतयुद्ध के पश्चात् गुटनिरपेक्ष आंदोलन महत्त्वहीन हो गया है भले ही इसकी प्रासंगिकता कुछ कम हुई हो परन्तु यह निर्विवाद है कि नवउवनिवेशवाद के इस युग में आर्थिक न्याय की प्राप्ति के लिए प्रयास का यही एक महत्वपूर्ण साधन है।

शोध का उद्देश्य

वैज्ञानिक ज्ञान केवल घटनाओं का अवलोकन या तथ्यों को एकत्रित करने से प्राप्त नहीं होता। उसके लिये उद्देश्यों का सहारा लिया जाता है। ये समस्याओं के अनुमानित समाधान या प्रश्नों के संभावित उत्तर होते है। जिसकी बाद में विधिवत जांच विश्लेषण या परीक्षा की जाती है। जिससे वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति होती है।

गुटनिरपेक्षता का विकास

द्वितीय विश्व–युद्ध के बाद विश्व दो विरोधी गुटों–सोवियत गुट और अमरीकी गुट में विभक्त हो चुका था और दूसरी तरफ एशिया एवं अफ्रीका के राष्ट्रों का स्वतन्त्र अस्तित्व उभरने लगा था। अमरीकी गुट एशिया के इन नवोदित राष्ट्रों पर तरह–तरह के दबाव डाल रहा था ताकि वे उसके गुट में शामिल हो जाएं लेकिन एशिया के अधिकांश राष्ट्र पश्चिमी देशों की भांति गुटबन्दी में विश्वास नहीं करते थे। वे सोवियत साम्यवाद और अमरीकी पूंजीवाद दोनों को

अस्वीकार करते थे। वे अपने आपको किसी 'वाद' के साथ सम्बद्ध नहीं करना चाहते थे और उनका विश्वास था कि उनके प्रदेश 'तीसरी शक्ति' (Third Force) हो सकते हैं जो गुटों के विभाजन को अधिक जटिल सन्तुलन में परिणत करके अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग में सहायक हो सकते हैं।

गुटों से अलग रहने की नीति अर्थात् गुटनिरपेक्षतावाद एशिया के नव–जागरण की प्रमुख विशेषता थी। सन् 1947 में स्वतन्त्र होने के उपरान्त भारत ने इस नीति का पालन करना शुरू कियाय उसके बाद एशिया के अनेक देशों ने इस नीति में अपनी आस्था व्यक्त की। जैसे–जैसे अफ्रीका के देश स्वतन्त्र होते गए वैसे–वैसे उन्होंने भी इस नीति का अवलम्बन करना शुरू किया। भारत के जवाहरलाल नेहरू, मिस्र के राष्ट्रपति नासिर तथा यूगोस्लाविया के मार्शल टीटो ने 'तीसरी शक्ति' की इस धारणा को काफी मजबूत बनाया।

वस्तुतः शीत–युद्ध के राजनीतिक ध्रुवीकरण ने गुटनिरपेक्षता की समझ तैयार करने में एक उत्प्रेरक का कार्य किया। लम्बे औपनिवेशिक आधिपत्य से स्वतन्त्र होने के लम्बे संघर्ष के बाद किसी दूसरे आधिपत्य को स्वीकार कर लेना नवोदित राष्ट्रों के लिए एक असुविधाजनक स्थिति थी। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में वे एक ऐसी भूमिका की तलाश में थे जो उनके आत्मसम्मान और क्षमता के अनुरूप हो। क्षमता स्तर पर किसी एक राष्ट्र के लिए ऐसी स्वतन्त्र भूमिका अर्जित कर पाना एक भागीरथी प्रयत्न होता, जिसकी सम्भावनाएं भी अत्यधिक सन्दिग्ध बनतीं।

अतः आत्मसम्मान की एक अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका के लिए सामूहिक पहल न सिर्फ वांछित थी, अपितु आवश्यक थी। स्वतन्त्रता और सामूहिकता की इस मानसिकता ने गुटनिरपेक्षता की वैचारिक और राजनीतिक नींव रखी। इस प्रक्रिया को शीत–युद्ध के तात्कालिक राजनीतिक वातावरण ने गति प्रदान की। गुट निरपेक्ष आंदोलन के उदभव विकास एंव इसके प्रमुख प्रयोजनों, सिंद्धान्तो आदि का उल्लेख करने के साथ ही वर्तमान तक विश्व में इस आंदोलन ने अपना विस्तार किया है उसकी एक सक्षिंप्त जानकारी पुनः दोहराई जा सकती है :–

तालिका 1: कुल शिखर सम्मेलन का विवरण

क्रम सं	शिखर सम्मेलन	स्थान	वर्ष	सदस्य संख्या
1	पहला	बेलग्रेड	1– 6 सितम्बर 1961	25
2	दूसरा	काहिरा	5–10 सितम्बर 1964	47
3	तीसरा	लुसाका	8–10 सितम्बर 1970	53
4	चौथा	अल्जीयर्स	5–09 सितम्बर 1973	75
5	पांचवा	कोलम्बो	16–19 सितम्बर 1976	85
6	छठा	हवाना	3–09 सितम्बर 1979	92
7	सांतवा	नई दिल्ली	7–12 मार्च 1983	100
8	आठवां	हरारे	1–06 सितम्बर 1986	101
9	नोवां	बेलग्रेड	4–07 सितम्बर 1989	102
10	दसवां	जकार्ता	01–07 सितम्बर 1992	108
11	ग्यारवां	कार्टाजेना	18–20 अक्टूबर 1995	113
12	बारहवां	डर्बन	02–03 सितम्बर 1998	114
13	तेहरवां	क्वालालम्पुर	20–25 फरवरी 2003	116
14	चोदहवां	हवाना	11–16 सितम्बर 2006	118
15	पंद्रहवा	शर्मअलशेख	11–16 जुलाई 2009	118
16	सोलहवां	तेहरान	26 से 31 अगस्त 2012	120
17	सत्रहवां	क्राकस बेनेजुएला	2016	
18	अठारहवां	अजरबैजान	2018	

इसके विभिन्न सम्मेलन शांति व निशस्त्रीकरण, न्याय के लिये आग्रह नव उपनिवेशवाद के विरूद्ध जिहाद, आर्थिक आयामो को प्राथमिकता देने वाले शस्त्रों का निर्धारण, अधिक जुझारूपन, आर्थिक एकता का एहसास, रंगभेद के खिलाफ संघर्ष, आर्थिक व पर्यावरण प्राथमिकताओं का निर्धारण करने वाले, शीतयुद्ध की समाप्ति पर उदासीनता का अन्त करने वाले, नये दायित्व तय करने वाले तथा आतंकवाद को समाप्त करने वाले विचारों के पर्याय बन गये और अन्ततः यह मानवता की वर्तमान समस्याओ को सुलझाने से संबधित आन्दोलन बन गया। तथा प्रारम्भ से अंत तक जिस बात को प्राथमिकता मिली वह यही कि किस प्रकार मतभेद रहित, युद्ध रहित, शांतिपूर्ण ओर खुशहाल दुनिया का निर्माण हो सके।

गुटनिरपेक्षता का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व

गुटनिरपेक्षता विश्व राजनीति में राष्ट्रों के लिए एक नए विकल्प के रूप में निश्चय ही स्थायी रूप धारण कर चुकी है। इसने विशेषतः राष्ट्र समाज के छोटे–छोटे और अपेक्षाकृत कमजोर सदस्यों के सन्दर्भ में, राष्ट्रों की स्वतन्त्रता और समता बनाए रखने में योग दिया है। इसने विश्व के पूर्ण ध्रुवीकरण को रोककर, विचारधारागत शिविरों के विस्तार को और प्रभाव को संयत करके तथा गुटों के अन्दर भी स्वतन्त्रता की शक्तियों को प्रोत्साहन देकर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा बनाए रखने तथा उसे बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योग दिया है। इसने संयुक्त राष्ट्र संगठन के भीतर और बाहर दोनों जगह बहुत–से कल्याणकारी क्षेत्रों में, जैसे कि उपनिवेशों को स्वतन्त्र कराने, प्रजातीय समता को साकार करने तथा अल्प–विकसित देशों के आर्थिक विकास के क्षेत्र में बहुत बड़ा योग दिया है।

आज संयुक्त राष्ट्र संघ के दो–तिहाई देश गुटनिरपेक्षता के दायरे में आ चुके हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न मंचों से गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों ने विश्व–शान्ति, उपनिवेशवाद के अन्त, परमाणु अस्त्रों पर रोक, निःशस्त्रीकरण, हिन्दमहासागर को शान्ति क्षेत्र घोषित करना, नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के निर्माण, आदि विषयों पर संगठित रूप से कार्यवाही की है और सफलता हासिल की है।

यह भी प्रश्न किया जाता है कि आज गुटनिरपेक्षता का क्या औचित्य रह गया है। गुटनिरपेक्षता की सार्थकता द्वितीय विश्व–युद्ध

के–बाद शीत–युद्ध वातावरण में तो थी, किन्तु पिछले 15–20 वर्षों में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बहुत सारे परिवर्तन हुए हैं। मसलन शीत–युद्ध का अन्त हो चुका है, सोवियत संघ का विघटन हो चुका है, पूर्वी यूरोप के देशों में साम्यवाद को कब्र में दफनाया जा चुका है, वारसा पैक्ट भंग कर दिया गया है, नाटो की भूमिका में परिवर्तन आ रहा है जर्मनी का एकीकरण हो चुका है। सभी प्रमुख शक्तियों के बीच एक–दूसरे के प्रति सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध हैं। अमरीका और रूस मिलकर अंतरिक्ष स्टेशन का संचालन कर रहे हैं और नाभिकीय ऊर्जा पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को उन्होंने नया आयाम दिया है। अमेरिका और चीन के बीच 300 अरब डॉलर का व्यापार है। रूस वर्तमान समय में पश्चिमी यूरोप, चीन और जापान के लिए ऊर्जा के प्रमुख आपूर्तिकर्त्ता के रूप में उभरा है। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि आखिर किसके खिलाफ गुट निरपेक्ष देश अपनी गुटनिरपेक्षता प्रदर्शित करेंगे ? गुटनिरपेक्षता का उदय शीत–युद्ध के सन्दर्भ में हुआ था और आज शीत–युद्ध के अन्त हो जाने के कारण गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अप्रासंगिक हो गया है।

आर्थिक दृष्टि से समृद्ध राष्ट्रों के गुट उभरकर स्वयं ही प्रतिस्पर्द्धा कर लेंगे और इससे विकासशील राष्ट्रों की स्वतन्त्रता और हितों को खतरा पहुंचेगा। इस खतरे को नियन्त्रित करने के लिए उत्तर–दक्षिण सम्बाद को बनाए रखने में दक्षिण–दक्षिण सहयोग और नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बनाने के लिए गुटनिरपेक्ष आन्दोलन और जी–77 को एक होकर कार्य करना होगा।

आज निम्नलिखित क्षेत्रों में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता नजर आती हैः

- नई अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की पुरजोर माग करना।
- आणविक निरस्त्रीकरण के लिए दबाव डालना।
- दक्षिण–दक्षिण सहयोग को प्रोत्साहन देना।
- एक–ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अमरीकी दादागिरी का विरोध करना।
- विकसित और विकासशील (उत्तर–दक्षिण संवाद) देशों के बीच सार्थक वार्ता के लिए दबाव डालना।
- नव–औपनिवेशिक शोषण का विरोध किया जाए।
- संयुक्त राष्ट्र संघ के पुनर्गठन के लिए दबाव डाला जाए ताकि बड़े राष्ट्र प्रस्तावित पुनर्गठन के लिए राजी हो सकें यानी उनके 'वीटो' परिषद् की सदस्यता में पर्याप्त प्रयोग की जा सके या महासभा को और अधिकार दिए जा सकें।

निष्कर्ष

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने स्वतन्त्र विदेश नीति का सिद्धान्त देकर और नवोदित देशों को एक मंच उपलब्ध करा कर सैनिक टकराव की दिशा में सम्भावित व्यापक रुझान को रोक दिया और शीत–युद्ध का तनाव कम करने तथा शान्ति स्थापना की दिशा में प्रोत्साहन दिया। आपसी विचार–विमर्श द्वारा समझा–बुझाकर और जोरदार प्रचार करके आन्दोलन ने उपनिवेशवाद उन्मूलन की प्रक्रिया को भी गति प्रदान की। 1960 के बाद यह महसूस किया गया कि राजनीतिक उपनिवेशवाद का तो उन्मूलन हो रहा है लेकिन नव–स्वाधीन राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से बहुत कमजोर हैं और औद्योगिक देशों पर निर्भर हैं जिससे लगता है कि निर्धन देशों पर धनी देशों की चौधराहट बराबर बनी हुई है।

अतः नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था स्थापित करने की मांग की जाने लगी। अब अन्तर्राष्ट्रीय चिन्ता के विषय आर्थिक समस्या और पर्यावरण प्रदूषण रोकने की समस्या रह गए। लुसाका और अल्जीयर्स सम्मेलनों में नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का प्रस्ताव रखकर आन्दोलन ने अब विश्व में प्रदूषण की समस्या पर ध्यान केन्द्रित किया है। इससे सिद्ध होता है कि गुटनिरपेक्ष आन्दोलन शान्तिपूर्ण, समतावादी विश्व व्यवस्था स्थापित करके विकासशील देशों का भविष्य उज्ज्वल बनाने के प्रयासों में निरन्तर प्रयास करता है। बाली (इण्डोनेशिया) में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के समन्वय ब्यूरो की बैठक (14–15 मई 1992) में सदस्य देशों ने आशंका व्यक्त की कि पूरब–पश्चिम टकराव की समाप्ति से उत्तर–दक्षिण टकराव शुरू हो सकता है। शीत–युद्ध समाप्ति की परिणति उत्तर–दक्षिण टकराव में हो सकती है अतः बदली हुई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को संस्था का रूप धारण किए पांच दशक से अधिक का समय हो चुका है। उसकी सदस्य संख्या 120 तक पहुंच गयी है, जो इस बात का सूचक है कि इस आन्दोलन का बल और प्रभाव बढ़ रहा है।

प्रासंगिक बने रहने के बावजूद गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अपने महत्व व प्रभावी होने की क्षमता को धीरे–धीरे खोता जा रहा है जिसे भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं माना जा सकता है। शिखर सम्मेलन को अब पहले की तरह गम्भीरता से नहीं लिया जा रहा है इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि कार्टागेना सम्मेलन में केवल 43 राष्ट्रों के शासनाध्यक्ष सम्मिलित हुए। शिखर सम्मेलन में यह भी देखने को मिलता है कि सदस्यों का एक बड़ा हिस्सा संयुक्त राज्य अमरीका का पक्षधर है तथा उसका पुरजोर विरोध करने के स्थान पर की भाषा में बात करता है। सदस्य राष्ट्रों की इस अमरीका परस्ती के चलते अमरीका के ऊपर अंकुश के रूप में 'नाम' की भूमिका सीमित हो जाती है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक स्थायी तत्व है और राष्ट्रों के अस्तित्व की भांति इसका अस्तित्व और प्रासंगिकता निरन्तर बनी रहेगी। इसका मूल कारण यह है कि गुटनिरपेक्षता का सम्बन्ध विकास शील राष्ट्रों की स्वतन्त्रता, उसको अक्षुण्ण बनाये रखने की आवश्यकता और विकास से है, न कि शीतयुद्ध या उसकी समाप्ति अथवा गुटबद्धता से। संक्षेप में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का सम्बन्ध मुख्यतः पांच 'D' से रहा हैः विउपनिवेशीकरण (Decolonisation), विकास (Development), तनाव–शैथिल्य (Détente), निरस्त्रीकरण (Disarmament) और लोकतन्त्रीकरण (Democratisation)। अशान्त एवं अस्त्र–शस्त्रों से सुसज्जित विश्व में यह एक सुरक्षा नली है।

संदर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल एवं पनसानिया, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध नवीन परिप्रेक्ष्य", आस्था प्रकाशन, जयपुर, 2010
2. देव बाला, शान्ति, "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त", उत्तरप्रदेश, हिन्दी सस्थान, 1997
3. फडिया, बी. एल., "अन्तरर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त एवं मुख्य मुद्दे," साहित्य भवन, 2010
4. घई, यू. आर. (1) "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति", (2) "भारत की विदेश नीति" जालंधर, 2008
5. जैन, बी. एम., "प्रमुख देशों की विदेशी नीतियां" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1996–97
6. जौहरी, जे. सी., "विश्व राजनीति के बदलते आयाम" जालन्धर, 2008
7. पंत, पुष्पेश और जैन, श्रीपाल, "अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध", मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1997–2007
8. पंत, पुष्पेश और जैन, श्रीपाल, "प्रमुख देशों की विदेश नीतियां", मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1996–2005
9. पंत, पुष्पेश और जैन, श्रीपाल, "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति", मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1996–2007

10. पाण्डे, दिनेशचन्द्र, "द्वि–ध्रुवीयता मे गुट– निरपेक्षता", भाग–1 व भाग–2, उत्तर प्रदेश, हिन्दी संस्थान, 1991
11. राजन, एम.एस., "गुट–निरपेक्षता आन्दोलन एवं सम्भावनाऐं", हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 1991
12. वेददान, सुधीर, "भारत की विदेश नीति : बदलते सन्दर्भ", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1999
13. यादव, डॉ. आर. एस., "भारत की विदेश नीति : एक विश्लेषण" किताब महल, इलाहाबाद, 2005, – संशोधित पीयरसन नई दिल्ली 2012
14. चतुर्वेदी मनोरमा, "गुट–निरपेक्षता आन्दोलन बदलता परिदृश्य", अंकुर प्रकाशन, उदयपुर– 2006
15. कुमार महेन्द्र, "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष", शिवलाल अग्रवाल एवं कम्पनी आगरा, 1989
16. देवबाला शांति, "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त" उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान 1997
17. फडिया बी. एल. "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति सिद्धान्त व मुख्य मुद्दे" आगरा 2010
18. ग्हलोत बी. सिंह "भारत की विदेश नीति" अर्जुन पब्लिक हाउस, नई दिल्ली 2004
19. जौहरी जे सी "विश्व राजनीति के बदलते आयाम" जालन्धर 2008
20. मोरगेन्थ्यू हंस जे. "राष्ट्रों के मध्य राजनीति" हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ 1976